ऊँट के प्रसव सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ एवं रखरखाव प्रबन्ध

आलेख

चम्पक भकत

दीपक चतुर्वेदी

नरेन्द्र शर्मा

एवं

मोहन सिंह साहनी

ICAR

NATIONAL RESEARCH CENTRE ON CAMEL
BIKANER

मरुस्थलीय अर्थव्यवस्था और शुष्क जमीन पशुधन उत्पादन व्यवस्था में ऊँट एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शुष्क क्षेत्रों में आजीविका, पशुधन, खेतीबाड़ी के सीमित स्त्रोतों के कारण आर्थिक स्थिति तीक्ष्ण है, ग्रामीण अर्थव्यवस्था अभी तक बहुत हद तक ऊँट शक्ति द्वारा संचालित व्यवस्थाओं पर ही आश्रित है। राजस्थान के 11 मरुस्थलीय जिलों में कृषि के क्षेत्र में ढुलाई शक्ति की अर्थव्यवस्था का विश्लेषण करने से यह प्रकट होता है कि कृषि के लिए कुल 13.45 लाख होर्सपावर शक्ति में से ऊँटों द्वारा 32.9%, बैलों 27.8%, ट्रेक्टरों से 32.6% व अन्य स्त्रोतों से 6.9% पूर्ति की जाती है। साधारणतया 4 वर्ष की आयु से ही ऊँट को विभिन्न कार्यों हेतु उपयोग में लेना शुरू कर देते हैं। यदि अच्छा पोषण उपलब्ध हो तो सुदृढ़ एवं गठित शरीर वाले ऊँटों को तीन वर्ष की आयु से ही कार्य के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है किन्तु सम्पूर्ण कार्य एवं भारवाहन क्षमता 5 वर्ष की आयु के बाद ही अपेक्षित है। ऊँटों के कार्य-प्रशिक्षण में लगभग एक से दो माह लग सकते हैं।

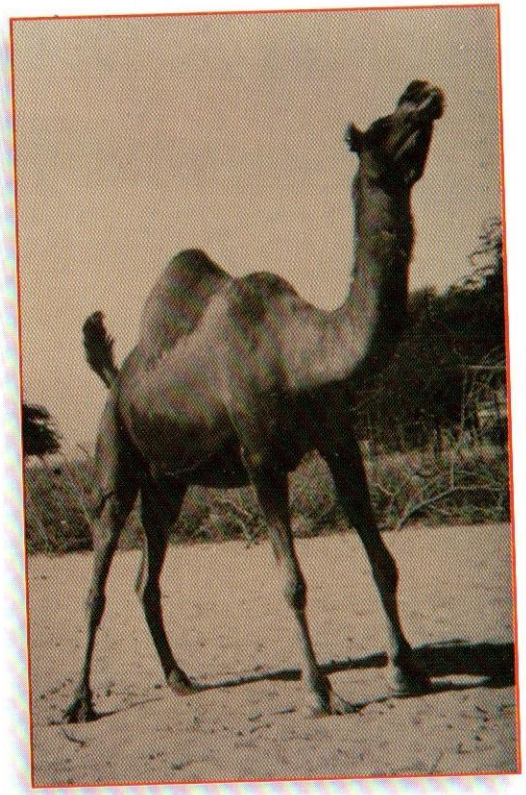

प्रसव पीड़ा के लक्षण दिखाती हुई मादा

ऊँट का मुख्य उपयोग माल परिवहन करने, यातायात तथा कृषि सम्बन्धी कार्यों आदि में लिया जाता है। प्रचलित लोकोक्तियों के अनुसार ऊँट का दूध कई व्याधियों के उपचार के लिए प्रयोग में आता है तथा बहुत लाभदायक पाया गया। गाँवों में कम दूरी के व्यापारिक परिवहन के लिए ऊँट गाड़ा ही सबसे सस्ता मुख्य साधन है। भारतीय उष्ण, शुष्क क्षेत्र लगभग 3.0 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है जो राजस्थान में (61%), गुजरात (20%), पंजाब व हरियाणा (9%) और आन्ध्र प्रदेश व कर्नाटक (10%) के हिस्सों में स्थित है। विश्वभर में ऊँटों की कुल आबादी 19.6 मिलियन और भारत में 1.52 मिलियन (वर्ष 1998 फ.ए.ऊ.) है। यह अधिकांशतः राजस्थान,

हरियाणा और गुजरात में पाए जाते हैं। जिसमें से केवल राजस्थान में ऊँटों की आबादी 70 प्रतिशत है। यह रेगिस्तानी शुष्क तथा अर्धशुष्क क्षेत्रों की, विशेष रूप से राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ऊँट के महत्त्व को साफ दर्शाती है। ऊँट रेगिस्तान का जहाज कहलाता है। रेगिस्तानी सीमा क्षेत्रों में सुरक्षा और कानून व्यवस्था बनाये रखने में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है। मरुस्थलीय क्षेत्र की कठिन परिस्थितियों में सहज शारीरिक अनुकूलन की क्षमता के कारण यह; इस प्रदेश में एक विशिष्ट पशु के रूप में पहचान बनाये हुए है।

प्रसव के पश्चात् मादा अपने नवजात बच्चे के साथ

प्रजनन

ऊँट एक ऋतु अभिजनक पशु है। आमतौर पर ऊँटनी (सांड) 'पाली' (गर्मी) में और ऊँट 'झूँठ' या रट में दिसम्बर से मार्च तक आते हैं। अक्सर ऊँटनी करीब साढ़े तीन से चार वर्ष की उम्र में वयस्क होती है, जबकि ऊँट 5-6 वर्ष की उम्र में 'रट' में आता है तथा इसकी 'पोल-ग्रन्थि' से एक गहरे रंग का पदार्थ स्त्रावित होता है। ऊँटनी में गर्भाकाल लगभग 13 महीनों का होता है।

मादा की जरायुनाल (डिफ्यूज टाइप)

प्रसव/प्रसूती आचरण की विभिन्न अवस्था के विशिष्ट लक्षण

ब्याने के प्रत्याशित दिनाङ्क से लगभग एक सप्ताह पहले से ऊँट की प्रसूति-स्थिति को अवलोकन में रखना चाहिए। प्रसूति ऊँट की प्रसव पीड़ा का आचरण व्यवहार निम्नलिखित है –

1. प्रसूती मादा ऊँट मुख्य बाड़े या और सभी साथियों से पृथक व अलग रहना चाहती है।
2. पूँछ के जड़ के दोनों तरफ पर दो गहरे कटाव दिखाई देते हैं।
3. अपलास्थि हड्डी के स्थान के मध्य अवतलीत होता है।
4. योनि द्वार के चारों तरफ सूजन दृश्यमान होती है।
5. खड़े होना - बैठ जाने की पुनरावृत्ति करती है।
6. दुग्ध नाड़िका में सूजन आ जाती है तथा वह मोटी हो जाती है।
7. स्तन ग्रंथि और थन आकार में बढ़ जाते हैं।

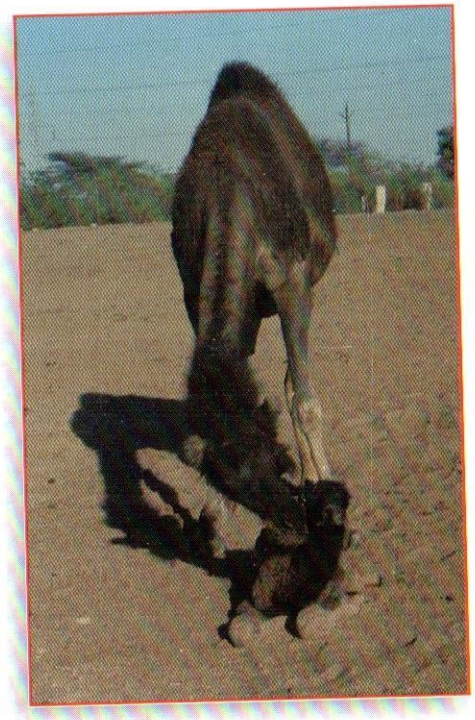

नवजात बच्चे को सूंघना व नाक लगाना

यह प्रसव काल के मुख्य लक्षण हैं जिनसे पता चलता है कि जल्द ही (1-2 घण्टे के भीतर) प्रसव होने वाला है।

प्रसव के समय नवजात बच्चा अधिकांशतः (80 प्रतिशत) ऐंल्टो-कोरियन थैली फटने के बाद बाहर निकलता है, जबकि कुछ स्थिति में ऐसा होता है जहाँ पर ऐंल्टो-कोरियन थैली जैसी की जैसी निकल जाती है तथा बाहर आकर फटती है और तत्पश्चात गेहूँ के भूसे के रंग का तरल / तरलता पदार्थ की विमुक्ति होती है। औसत समय अन्तराल ऐंल्टो-कोरियन थैली के आभास / प्रतीति और निष्कासन

के मध्य 3.50 ± 1.00 मिनट होती है और इसकी समय-सीमा 2 से 5 मिनट होती है। औसत समय अन्तराल ऐंल्टो-कोरियन थैली के निष्कासन और नवजात शिशु के आभास / प्रतीति के मध्य 5.25 ± 1.66 मिनट जबकि समय-सीमा 3 से 7 मिनट होती है। अधिकांशतः स्थिति में प्रसव सामान्य ढंग से होता है। (नवजात बच्चे की अगली टांग पर ढोडी रखी हुई होती है)। औसत समय अन्तराल नवजात शिशु के आभास / प्रतीति और निष्कासन के मध्य 6.23 ± 2.44 मिनट (सहायता प्राप्त प्रसव स्थिति) और 42.50 ± 6.50 मिनट (असहायता प्राप्त प्रसव स्थिति) होता है तथा समय-सीमा 5-10 मिनट (सहायता प्राप्त प्रसव स्थिति में) और 25-60 मिनट (असहायता प्राप्त प्रसव स्थिति में) के मध्य हो सकती है। सहायता प्राप्त स्थिति का मतलब जहाँ पर प्रसव प्रक्रिया में मनुष्य सहायता प्रदान की जाती है। जरायुनाल के निष्कासन के लिए प्रसवोत्तर औसत समय 55.86 ± 10.00 मिनट, जबकि इसकी समय-सीमा 30 से 120 मिनट के मध्य होती है। टोरड़ा/टोरड़ी के बाहर निष्कासन के बाद, मादा जल्द से जल्द खड़ी हो जाती है और बछड़े को सूंघना और नाक लगाना इसके बहुत विशिष्ट लक्षण हैं। सामान्य और प्राकृतिक प्रसव प्रक्रिया में जरायुनाल को मादा द्वारा (100%) नहीं खाया जाता है। प्रसव के बाद अधिकतर मादा (80%) अपने बच्चे को जल्द ही अपना लेती हैं (5 से 10 मिनट के अन्दर) लेकिन कुछ मादाएँ (20%) अपनाने की प्रक्रिया में कुछ ज्यादा समय लेती हैं। अधिकतर स्थिति में (90%) मादा अपने बच्चे की रक्षा / संरक्षा चरम सीमा पर करती हैं और तुरन्त/तत्काल किसी को भी अपने बच्चे को हाथ लगाने की अनुमति नहीं देती हैं। लेकिन कुछ मादाएँ (10%) इस स्थिति में उदासीन होती हैं।

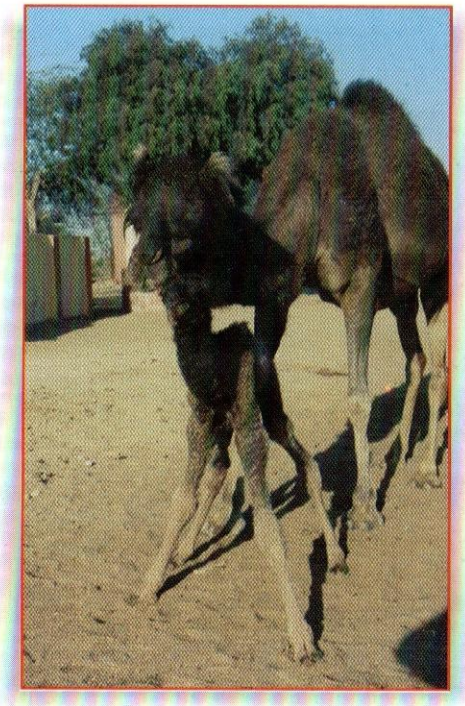

नवजात बच्चे द्वारा पहली बार खड़े होने का सफल प्रयास

नवजात बच्चे का आचरण

* जन्म उपरान्त नवजात बच्चे को अपने पाँव पर खड़े होने के लिए औसत समय 56.23 ± 10.44 मिनट लगता है, जबकि समय-सीमा 25 से 90 मिनट तक हो सकती है।

* प्रथम स्तन / दुग्ध पान के लिए औसत समय 80.26 ± 8.53 मिनट, जबकि समय-सीमा 60 से 100 मिनट होती है।
* स्तन / दुग्ध पान के लिए समय-अन्तराल 1 से 3 घण्टे के मध्य होता है।
* पहला मल निष्कासन का औसत समय 32.00 ± 5.64 मिनट, जबकि समय-सीमा 10 से 50 मिनट तक हो सकती है।
* प्रथम पेशाब के लिए औसत समय 61.50 ± 2.11 मिनट लेता है। जबकि समय-सीमा 55 से 70 मिनट होती है।
* नवजात बच्चे का शारीरिक औसत तापमान (डिग्री सेन्टिग्रेट), 36.58 ± 1.29 होता है। जबकि इसकी सीमा 36 डिग्री से 38 डिग्री सेन्टिग्रेट होती है।
* प्रसव के बाद बच्चे की नाड़ी की गति 122.00 ± 8.54 प्रति मिनट होती है और इसकी सीमा 115 से 130 प्रति मिनट होती है।
* प्रसवोत्तर बच्चे की श्वसन दर 35.50 ± 2.66 प्रति मिनट होती है और इसकी सीमा 29 से 43 प्रति मिनट होती है।

नवजात बच्चे द्वारा प्रथम बार दूध पीने का प्रयास

* अधिकतर स्थिति में (90%) पैदा हुए बच्चे की चलन गति प्रसव के बाद 12 से 24 घण्टे के अन्दर सामान्य हो जाती है। लेकिन कुछ बच्चे (10%) अपने चलने की क्रिया को सामान्य करने में ज्यादा समय लेते हैं
* दूसरी तरफ अधिकतर बछड़े (90%) प्रसव के 6 से 7 दिन बाद आसानी से चल सकते हैं। यद्यपि कुछ कम बछड़े (10%) 6 से 7 दिन से पहले आसानी से चल सकते हैं।

ऊँट के बच्चे का परिपालन

प्रसव के दौरान

प्रसव के अनुमानित समय के एक सप्ताह पूर्व से मादा ऊँट का विशेष ध्यान रखना जरूरी हो जाता है। बच्चों के पैदाइश के समय किसी प्रकार की मदद की आवश्यकता पड़ने पर मदद करने वाले व्यक्ति के हाथों के नाखून कटे हुए होने चाहिए तथा प्रयुक्त हाथों को साबुन / डिटॉल / सेवेलॉन / पोटेसियम परमेंगनेट से धोना उचित है।

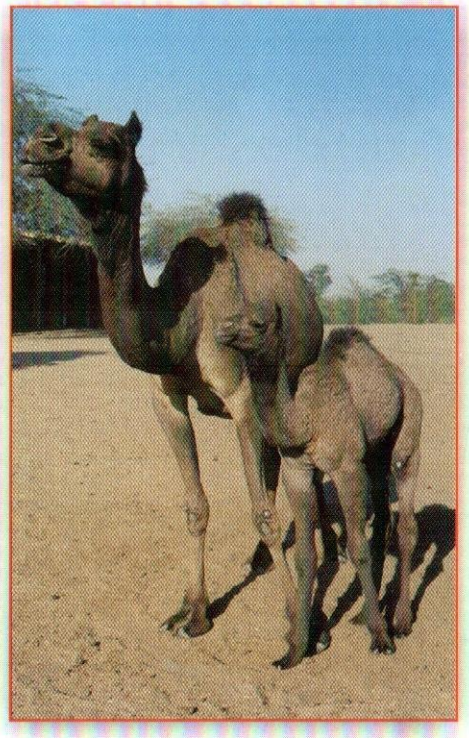

माँ के साथ बच्चा (उम्र 7 दिन)

प्रसव के बाद

बच्चे के जन्म के बाद उसके नाड़े को ब्लेड द्वारा नाभि से करीब 4'' या 5'' की दूरी से काटकर साफ मोटे धागे से कसकर बाँध देवें एवं उसके बाद नाड़े पर टिन्चर आयोडीन या डिटॉल लगाना चाहिए। प्रसव के बाद ही बच्चों के नाक को सर्वप्रथम साफ मुलायम कपड़े से साफ करना एवं सारे शरीर को पोंछना चाहिए। अत्यधिक ठण्ड या अत्यधिक गर्मी से नवजात बच्चे का बचाव करना उचित है। ब्याने के बाद जो दूध आता है उसे खीस (कोलेस्ट्रम) के नाम से जाना जाता है। कोलेस्ट्रम में रोग प्रतिरोधक शक्ति होती है। इसके पीने से बच्चे में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। प्रायः स्वस्थ नवजात बच्चे एक घण्टे में स्वयं अपनी माँ का दूध पीने लग जाते हैं। यदि मादा ऊँट बच्चे को दूध न पिलाये तो बोतल में निपल लगाकर स्वयं दूध पिलाने का प्रयास करना जरूरी है। जन्म से करीब तीन माह तक बच्चा केवल माँ के दूध पर ही निर्भर रहता है। उसके पश्चात् माँ के दूध के साथ-साथ हरा / सूखा चारा भी थोड़ी-थोड़ी मात्रा में खाना शुरू कर देता है। जन्म के पश्चात् बच्चे के ए.टी.एस. का इन्जेक्शन लगवाना चाहिए। जन्म के तीन दिन पश्चात, विटामिन 'ए' (छः लाख यूनिट) लगाने से बच्चों

को दस्त एवं रतौंधी रोग से बचाया जा सकता है तथा मृत्यु-दर भी काफी कम हो सकती है। कोई सुरक्षित पेट के कीड़े मारने की दवा उपयुक्त मात्रा में 6 मास की आयु तक बच्चे को देना जरूरी है। सर्रा (तिब्रसा) से बच्चों को बचाने के लिए तीन माह पश्चात् टीका लगवाना उपयुक्त रहता है।

गर्भिणी मादा ऊँट का परिपालन

इस दौरान मादा ऊँट को उपयुक्त आहार चाहिए। प्रसव के सात आठ दिन पहले गर्भिणी ऊँट को चरने हेतु चारागाह में नहीं भेजना चाहिए। घर पर ही उनकी देखभाल करनी चाहिए। गर्भकाल में हरा चारा उपलब्ध हो तो अवश्य देना चाहिए। इसमें विटामिन 'ए' होने की वजह से माँ व बच्चे को रतौंधी रोग नहीं होता। गर्भावस्था में मादा ऊँट को नर ऊँटों के साथ रखना उचित नहीं होगा। प्रसव के पश्चात माँ के आहार का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। ब्याने के बाद माँ के थनों से उपलब्ध दूध बच्चा पूरी तरह न पी सके या दूध ज्यादा मात्रा में हो तो थनों में उपलब्ध अधिक दूध को दूह कर निकाल देना चाहिए।

उपसंहार

कृषि परिस्थितिक एवं औद्योगीकरण में अभिनव भूतकाल में आये द्रुत परिवर्तन का प्रभाव ऊँट प्रबंध प्रणाली पर पड़ा है। वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा उष्ट्र का रखरखाव, किसान तथा पशु पालक, जो कि मरुस्थल तथा अर्द्ध-मरुस्थल में रहते हैं, के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा तथा उनके लिए अतिरिक्त आय का साधन बनेगा। ऊँट के बच्चे की मृत्यु-दर को कम करने तथा ऊँट से सर्वोत्तम लाभ लेने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि प्रसव अवधि में वैज्ञानिक प्रबंध प्रणाली अपनायें।

(राष्ट्रीय कृषि तकनीकी परियोजना के अर्न्तगत)

DESIGNED & PRINTED AT : PAVAN OFFSET PRINTERS, KALAWATI BHAWAN 'C', ALAKHSAGAR ROAD, BIKANER - 334001 PHONE : 0151-544594